वर्तमान समय में शक्ति में सहनशीलता, वचनबद्धता, त्यागशीलता, मानवता एवं श्रद्धा का ह्रास हो रहा है। ऐसे समय में 'रामचरित मानस' हमारे समाज का पथ प्रदर्शन कर सकती है, इसी उद्देश्य से दिनाँक 21 अक्टूबर 2016 को अग्रवाल महाविद्यालय बल्लबगढ़ में हिन्दी विभाग के तत्वावधान में अतिथि व्याख्यान का आयोजन हुआ। अतिथि व्याख्याता के रूप में डॉ शंकर लाल सारस्वत (सेवा निवृत एसोसिएट प्रोफेसर अग्रवाल महाविद्यालय) उपस्थित थे। व्याख्यान का विषय था 'रामचरितमानस में सामाजिकता और भक्ति'।

अग्रवाल महाविद्यालय प्राचार्य डॉ कृष्णकांत गुप्ता की प्रेरणा से महाविद्यालय सभागार में समय समय पर अनेकानेक कार्यक्रम विद्यार्थियों के लाभ हेतु कराये जाते हैं इसी श्रृंखला में यह व्याख्यान था। डॉ सारस्वत ने अपने वक्तव्य में रामचरितमानस से सम्बंधित अनेक महत्वपूर्ण बातों को उजागर किया -

रामचरितमानस आज के सन्दर्भ में पूर्ण रूप से प्रासंगिक है। इसमें निहित चरित्र राम, लक्ष्मण, भरत इत्यादि हमारे समाज में अनेक आदर्श उपस्थित करते हैं जैसे आदर्श पुत्र, भाई, राजा इत्यादि। वर्तमान परिपेक्ष्य में 'रामचरितमानस' हमारे समाज के लिए अनेकों ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करती है जिससे हमारा समाज उन्नतशील होने के साथ भक्ति के भाव से परिपूर्ण हो सकता है। हिन्दी विभागाध्यक्षा श्रीमती किरण आनंद के मार्गदर्शन में और डॉ अशोक निराला, डॉ रेनू माहेश्वरी, श्रीमती मंजू गुप्ता और डॉ बांके बिहारी आदि के सहयोग से यह कार्यक्रम हुआ।